

रसूलुल्लाह (ﷺ) के बताये हुए बेशकीमती कलिमात-ये कलिमात हर तरह की बीमारी से, शैतानी वस्वसों व असरात से हिफाजत में मुफीद है।

ये कलिमात ईमान वालों के लिये हर तरह की बीमारी से, बला से, शैतानी वस्वसों व असरात से हिफाजत में मुफीद है।

अल्लाह तआला फरमाते हैं :

[فَإِذَا قَرَأْتَ الْقُرْآنَ فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ] [النحل:98]

:أَنَّهُ كَانَ إِذَا قَامَ إِلَى الصَّلَاةِ اسْتَفْتَحَ، ثُمَّ يَقُولُ

أَعُوذُ بِاللَّهِ السَّمِيعِ الْعَلِيمِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ، مِنْ هَمْزِهِ وَنَفْخِهِ وَنَفْثِهِ

.رواه أحمد، والترمذي

“अऊजुबिल्लाहिस्समीइल अलीमी मिनश्शैतानिर्रजीमी मिन् हम्मिजही व नफिखही व नफिसही”

मैं पनाह में आता हूँ अल्लाह की जो सुनने वाला और जानने वाला है, शैतान मरदूद से, उसके वस्वसे से, उसके फूक से और उसके थूक से।

سَمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

۱ قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۝

۲ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ۝

۳ وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ إِذَا وَقَبَ ۝

۴ وَمِنْ شَرِّ النَّفَّاثَاتِ فِي الْعُقَدِ ۝

۵ وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ إِذَا حَسَدَ ۝

बिस्मिल्लाहिरहमानिर्रहीम

कुलअऊजु बिरब्बिल् फलक्- मिन् शर्रिमा खलक्- व मिन् शर्रिगासिकिन इज्जा वक्कब- व मिन् शर्रिन्नफ्फासाति फिल उक्कद- व मिन् शर्रिहासिदिन इज्जा हसद. (अल-कुरआन : 113, सूरह फलक )

तर्जुमा : कहो मैं पनाह मांगता हूँ सुबह के रब की। हर उस चीज के शर से जो उसने पैदा की है और

अंधेरी रात की

तारीकी के शर से जब उसका अंधेरा फैल जाये, और गिरोह में फूंकने वालों के शर से और हसद करने वाले की

बुराई से जब वो वो हसद करे।

हर फर्ज नमाज के बाद एक मर्तबा और फज्र व मग़रिब के बाद तीन-तीन मर्तबा पढ़ें।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

۱ قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ

۲ مَلِكِ النَّاسِ

۳ إِلَهِ النَّاسِ

۴ إِلَهِ النَّاسِ ۳ مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ الْخَنَّاسِ

۵ الَّذِي يُوسْوِسُ فِي صُدُورِ النَّاسِ

۶ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

कुलअऊजु बिरब्बिन्नास-मलिकिन्नास-इलाहिन्नास-मिन शरिल् वस्वासिल् खन्नास-अल्लजी यौवस्विसु फी सुदूरिन्नास- मिनल् जिन्नती वन्नास. (अल कुरआन : 114, सूरह नास )

तर्जुमा : कहो मैं पनाह मांगता हूँ इन्सानों के रब, इंसानों के बादशाह, इंसानों के हकीकी माबूद की। उस वस्वसा डालने वाले, पीछे हट जाने वाले के शर से, जो लोगों के दिलों में वस्वसे डालता है ख्वाह वो जिन्न में से हो या इंसान में से।

हर फर्ज नमाज के बाद एक मर्तबा और फज्र व मग़रिब के बाद तीन तीन मर्तबा पढ़ें।

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ، وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ، وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

ला इला-ह इल्लल्लाहु वहदहु ला शरी-क लहू लहुल् मुल्कु व लहुल् हम्दु व हुव अला कुल्लिल शैइन कदीर.

( सही बुखारी 6402 )

तर्जुमा : अल्लाह के सिवा कोई ( सच्चा ) माबूद नहीं, वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं, उसी की बादशाहत

और उसी की ही तारीफ है और वह हर चीज पर पूरी कुदरत रखता है।

(जो शख्स इस कलिमा को सुबह 100 मर्तबा पढ़े वो शाम तक अल्लाह की हिफाजत में रहेगा, जो शख्स इस कलिमा को शाम 100 मर्तबा पढ़े वो सुबह तक अल्लाह की हिफाजत में रहेगा )

بِسْمِ اللَّهِ الَّذِي لَا يَضُرُّهُ مَعَ اسْمِهِ شَيْءٌ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ

बिस्मिल्लाहिल्लाजी ला यजुरं मअस्मिही शैउन् फिल्अर्जि वला फिस्समाइ व-हुवस्समीउल् अलीम. ( जामेअ तिर्मिजी : 3387 , अबू दाऊद : 5087 )

तर्जुमा : उस अल्लाह के नाम के साथ जिसके नाम के होते हुए कोई चीज नुकसान नहीं पहुँचा सकती , जमीन की हो या आसमानों की वह खूब सुनने वाला खूब जानने वाला है ।

أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللَّهِ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ

अऊजु बि कलिमातिल्लाहि-ताम्माति मिन शरि मा खलक्. ( सहीह मुस्लिम : 2708 )

तर्जुमा : मैं अल्लाह के पूरे कलिमात के जरिये उसकी हिफाजत में आता हूँ उसकी मख्लूक की बुराई से । (हर शै से हिफाजत के लिये )

اللهم إني أعوذ بك من البرص ، والجذام ، والجنون ، وسيئ الأسقام

अल्लाहुमू-म इन्नी अऊजुबिक मिनल् बरसि वल्लजुजामि वल्लजुनूनि व सय्यिइल अस्काम. ( सुनन अबू दाऊद : 1554 )

तर्जुमा : ऐ अल्लाह ! मैं तेरी पनाह में आता हूँ बरस की बीमारी से, कोढ़ की बीमारी से, पागलपन की बीमारी से और हर किस्म की बुराई से । हर तरह की बीमारी से शिफा के लिये यह दुआ मुफीद है । (हर तरह की बीमारी से शिफा के लिये )

اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْهَمِّ وَالْحَزَنِ وَالْعَجْزِ وَالْكَسَلِ وَالْجُبْنِ وَالْبُخْلِ وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ غَلْبَةِ الدِّينِ، وَقَهْرِ الرِّجَالِ

अल्लाहुमू-म इन्नी अऊजुबि-क मिनल् हम्मि वल्हज्जि वल्अज्जि वल् क-स-लि वल्-जुब्-नि वल्-बुख्लि व गलबतिद्दीन व कहरि-रिजाल. ( सहीह बुखारी : 6369 )

तर्जुमा : ऐ अल्लाह ! यकीनन मैं तेरी हिफाजत चाहता हूँ परेशानी और गम से, कमजोरी और काहिली से और कनजूसी और बुजदिली से, कर्ज के बोझ और लोगों के जुल्म ( अत्याचार ) से ।

اللهم إني أعوذ بك من الفقر، والفلة، والذلة، وأعوذ بك من أن أظلم أو أظلم

अल्लाहुमू-म इन्नी अऊजुबि-क मिनल् फूक़ि व अऊजुबि-क मिनल किल्लति व-ज्जिल्लति व अऊजुबि-क अन अज्लम औ उज्लम. ( सुनन अबू दाऊद : 1544 )

तर्जुमा : ऐ अल्लाह ! मैं तेरी पनाह में आता हूँ मुहताजी से और तेरी पनाह में आता हूँ किल्लत और जिल्लत से और तेरी पनाह में आता हूँ इस बात से कि मैं किसी पर जुल्म करूँ या मुझ पर जुल्म किया जाये ।

أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللَّهِ التَّامَّةِ مِنْ غَضَبِهِ وَعِقَابِهِ وَشَرِّ عِبَادِهِ وَمِنْ هَمَزَاتِ الشَّيَاطِينِ وَأَنْ يَحْضُرُونِ

अऊजु बिकलिमातिल्-लाहित्ताम्माति मिन् गज्जबिही व इकाबिही व शरि इबादिही व मिन हमजातिशशयातीनि व अय्यहजुरून. ( जामेअ तिर्मिजी : 3528 )



अश्हदु अल्ला

इला-ह इल्ला अनू-त अऊजुबि-क मिन शरि नफसी व मिन शरिश्शैतानि व शिरकिही व अन्नक्तरि-फ अला नफसी

सूअन् अक् अजरहू इला मुस्लिम. (सुनन अबू दाऊद : 5083, जामेअ तिर्मिजी : 3391-3528, शैख अल्बानी ने इसे ज़ईफ कहा है )

तर्जुमा : ऐ अल्लाह ! गैब ( छिपे हुए) और हाजिर के जानने वाले ! आसमानों और जमीन को बेमिसाल पैदा करने वाले ! ऐ हर चीज के पालनहार और मालिक ! मैं गवाही देता हूँ कि (सच्चा माबूद तू ही है, मैं तेरी पनाह में आता हूँ अपने नफस की बुराई से, शैतान की बुराई से, उसकी साझेदारी से और इस बात से कि अपने ही खिलाफ कोई बुरा काम करूँ या किसी मुसलमान के खिलाफ कोई बुरा काम करूँ ।

أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللَّهِ التَّامَّةِ مِنْ كُلِّ شَيْطَانٍ وَهَامَّةٍ، وَمِنْ كُلِّ عَيْنٍ لَامَّةٍ

अऊजु बिकलिमातिल्-लाहि त्ताम्माति मिन् कुल्लि शैतानि व-व हाम्मति व मिन् कुल्लि ऐनिल्-लाम्मति. (बुखारी : 3371)

तर्जुमा : मैं अल्लाह तआला के तमाम कलिमात के जरिये उसकी पनाह में आता हूँ शैतान से, जहरीले जानवर से और हर मलामत करने वाली आँख की बुराई से । (नजरे-बद से हिफाजत के लिये मख्सूस )

اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ أَنْ أَشْرِكَ بِكَ وَأَنَا أَعْلَمُ، وَأَسْتَغْفِرُكَ لِمَا لَا أَعْلَمُ

अल्लाहुम्-म इन्नी अऊजुबि-क अन् उश्रि-क बि-क व अ-न अअलम् व अस्तगिफरू-क लिमा ला अअल्मु. ( शरह सहीह अल्-अदाबुल मुफ्रद : 551 )

तर्जुमा : ऐ अल्लाह ! मैं इस बात से तेरी हिफाजत में आता हूँ कि मैं जानते हुए किसी को तेरा शरीक (साझेदार ) ठहराऊँ और मैं तुझसे उस (शिरक ) की माफी चाहता हूँ जो मैं नहीं जानता । (शिरक से बचने के लिये यह कलिमात पढ़ते रहें )

ضَعَّ يَدَكَ عَلَى الَّذِي تَأَلَّمَ مِنْ جَسَدِكَ وَقُلْ بِاسْمِ اللَّهِ . ثَلَاثًا . وَقُلْ سَبْعَ مَرَّاتٍ أَعُوذُ بِاللَّهِ وَقُدْرَتِهِ مِنْ شَرِّ مَا أَجِدُ وَأُحَاذِرُ

बिस्मिल्लाह (3 मर्तबा) अऊजुबिल्लाहि व कुदरतिही मिन शरि मा अजिदु व उहाजिरु. (7 मर्तबा ) ( सहीह मुस्लिम : 2202 )

तर्जुमा : अल्लाह के नाम से शुरू । मैं अल्लाह तआला की कुदरत की हिफाजत में आता हूँ उस चीज की बुराई से जो मैं महसूस करता हूँ और जिसका मुझे डर है । (जिस्म में जिस जगह दर्द हो, वहां हाथ रखकर यह दुआ पढ़ें ।)

रब्बि अऊजुबिक मिन् हमजातिश्शयातीन. व अऊजुबिक रब्बि अय्यहजुरून. (सूरह मोमिनून : 97-98 )

तर्जुमा : ऐ मेरे परवरदिगार ! मैं हमजाद शैतानों के वस्वसों से तेरी पनाह चाहता हूँ । और ऐ. रब ! मैं तेरी पनाह चाहता हूँ कि वह मेरे पास आ जायें ।

اللَّهُمَّ عَافِنِي فِي بَدَنِي، اللَّهُمَّ عَافِنِي فِي سَمْعِي، اللَّهُمَّ عَافِنِي فِي بَصَرِي، اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْكُفْرِ  
وَالْفَقْرِ، اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ، لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ

अल्लाहम्-म आफिनी फी ब-द-नी, अल्लाहुम्-म आफिनी फी सम्-अी अल्लाहुम्-म आफिनी फी ब-स-  
री, ला इला-ह इल्ला अन्-त, अल्लाहुम्-म इन्नी अऊजुबि-क मिनल् कुफ्र वल्-फक्र अल्लाहुम्-म इन्नी  
अऊजुबि-क मिन अजाबिल् कब्रि, ला इलाह-ह इल्ला अन्-त. (सुनन अबी दाऊद : 5089 )

तर्जुमा : ऐ अल्लाह ! मुझे आफियत ( आराम ) दे मेरे बदन में, ऐ अल्लाह ! मुझे आफियत दे मेरे कानों  
में, ऐ अल्लाह मुझे आफियत दे मेरी आँखों में, तेरे सिवा कोई ( सच्चा ) माबूद नहीं। ऐ अल्लाह !  
यकीनन् मैं तेरी हिफाजत में आता हूँ कुफ और मुहताजी से और मैं तेरी हिफाजत में आता हूँ कब्र के  
अजाब से, तेरे सिवा कोई माबूद नहीं।

اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ فِتْنَةِ الْمَسِيحِ الدَّجَالِ وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ فِتْنَةِ الْمَحْيَا وَفِتْنَةِ  
الْمَمَاتِ اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْمَأْثَمِ وَالْمَغْرَمِ

अल्लाहुम्मा इन्नी अऊजुबिका मिन अजाबिल कब्रि व अऊजुबिका मिन फितनतिल् मसीही दज्जाल व  
अऊजुबिका मिनल् फितनतिल् म-या वल् ममात व अल्लाहुम्मा इन्नी अऊजुबिका मिनल् मअसमी  
वल् मगरमी. (बुखारी : 832, मुख्तसर सहीह  
मुस्लिम अल अलबानी : 306 )

तर्जुमा : ऐ अल्लाह ! मैं तेरी पनाह चाहता हूँ कब्र के अजाब से और मैं तुझसे पनाह चाहता हूँ मसीह  
दज्जाल के फिले से और मैं तुझसे पनाह चाहता हूँ जिन्दगी और मौत के फिले से और मैं पनाह चाहता  
हूँ गुनाह से और कर्ज से।

اللهم رب الناس، أذهب البأس، واشف، أنت الشافي لا شفاء إلا شفاؤك، شفاء لا يغادر سقماً

अल्लाहुम्-म रब्बन्नास अज्हिबिल बअ्स इश्फ अन्तश्शाफी ला शिफाअ इल्ला शिफाउक  
शिफाअल्ला युगादिर सकमा. (सही बुखारी : 5743 )

तर्जुमा : ऐ लोगों के पालने वाले ! तू दूर कर दे बीमारी और तू शिफा दे, तू ही शिफा देने वाला है, तेरे  
अलावा कोई शिफा देने वाला नहीं है, ऐसी शिफा दे कि कोई बीमारी पास न आये।

और अल्लाह ही बेहतर ईल्म रखने वाला है।